International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 09 Issue: 11 | Nov - 2025 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

ध्रुपद के वैश्विक प्रसार में बेतिया घराने की भूमिका: अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुतियाँ और प्रभाव

रेखा कुमारी

शोधार्थी

स्नातकोत्तर संगीत विभाग

तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर - 812007

शोध-सारांश

ध्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीन एवं शुद्ध शैलियों में से एक है। सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में बिहार के बेतिया राजघराने ने ध्रुपद को संरक्षण देकर इसे एक विशिष्ट घराने का स्वरूप प्रदान किया। बेतिया घराना गौहरबानी, खंडारबानी तथा डागरबानी से भिन्न अपनी अलग राग- रूपायन शैली के लिए विख्यात हुआ। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से बेतिया घराने के कलाकारों (विशेष रूप से पंडित इंद्रकुमार चटर्जी, पंडित फाल्गुनी मित्र, श्री अभिषेक मित्र, श्री सत्यकिंकर बनर्जी, पंडित प्रेमकुमार मल्लिक आदि) ने यूरोप, अमेरिका, जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया तथा दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में सैकड़ों संगीत-सम्मेलनों में ध्रुपद प्रस्तुत किया। इन प्रस्तुतियों ने न केवल ध्रुपद को वैश्विक मंच प्रदान किया अपितु पश्चिमी संगीतज्ञों, संगीत-शास्त्रियों तथा ध्यान-योग साधकों के बीच ध्रुपद की गहन आध्यात्मिकता को पहचान दिलाई। यह शोध-पत्र बेतिया घराने के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में योगदान, प्रमुख कलाकारों की यात्राओं, विश्वविद्यालयों में कार्यशालाओं, रिकॉर्डिंग्स तथा समकालीन ध्रुपद-शिक्षण पर उनके प्रभाव का दस्तावेजीकरण करता है।

शब्दकुंजी: ध्रुपद, वैश्विक प्रसार, गौहरबानी, खंडारबानी तथा डागरबानी आदि

प्रस्तावना:

ध्रुपद को संगीत का सम्राट् कहा जाता है। यह नाद-ब्रह्म की उपासना का सबसे प्राचीन एवं कठोर साधन है। पंद्रहवीं शताब्दी में राजा मानसिंह तोमर तथा स्वामी हरिदास के काल में ध्रुपद ने अपना स्वर्णिम रूप प्राप्त किया। सत्रहवीं शताब्दी में मुगल दरबारों से संरक्षण कम होने पर ध्रुपद कई क्षेत्रीय राजघरानों में विकेंद्रित हो गया। इन्हीं में बिहार का बेतिया राजघराना (वर्तमान पश्चिम चंपारण) सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा।[1]

बेतिया के राजा चक्रवर्ती सिंह (१७००-१७४० ई.) ने सेनिया वंश के प्रसिद्ध ध्रुपदिया मिसरी सिंह डागर को आमंत्रित किया था। बाद में बेतिया में ही एक स्वतंत्र घराना विकसित हुआ जिसे बेतिया घराना कहा गया। इस घराने की विशेषताएँ हैं - लंबे मीड़ वाले आलाप, गंभीर गायकी, चौताल- सुलताल की प्रधानता तथा रागों का शुद्ध रूप।[2]

बीसवीं शताब्दी के सातवें-आठवें दशक तक ध्रुपद मुख्यतः भारत तक सीमित था। डागर बंधु (नसीरुद्दीन व नसीर अमीनुद्दीन डागर) ने १९६०-७० के दशक में यूरोप में ध्रुपद को लोकप्रिय बनाया। किंतु बेतिया घराने के कलाकारों ने १९८० के बाद जिस निरंतरता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ध्रुपद को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया, वह अद्वितीय है।[3]

बेतिया घराने के कलाकारों अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुति:

बेतिया घराने के ध्रुपद कलाकारों ने १९८० के दशक से वैश्विक मंचों पर अपनी गहन और शुद्ध शैली से ध्रुपद को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। प्रमुख कलाकार पंडित इंद्रकुमार चटर्जी (जिन्हें कभी-कभी इंद्रकिशोर मिश्रा के रूप में भी जाना जाता है) ने १९८४ में जर्मनी और फ्रांस की यात्रा से प्रारंभ किया, जहाँ उन्होंने बर्लिन के विश्व ध्रुपद सम्मेलन (१९८७) में भाग लिया। इसके बाद नीदरलैंड्स में १९९०-९५ के दौरान नियमित कार्यशालाएँ आयोजित कीं, जहाँ राग दरबारी कानड़ा और भैरवी जैसे रागों की लंबी आलाप प्रस्तुतियाँ पश्चिमी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर गईं। कोलोन (जर्मनी, १९८५) में उनका पहला पूर्ण ध्रुपद कॉन्सर्ट चौताल में एक मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने बेतिया शैली की गंभीरता को यूरोपीय संगीत-जगत में स्थापित किया।

पंडित फाल्गुनी मित्र, बेतिया घराने के प्रमुख प्रचारक, ने १९९२ से अब तक ३५ से अधिक देशों में ५०० से ज्यादा कॉन्सर्ट दिए हैं, जो घराने के वैश्विक प्रसार का प्रतीक हैं। अम्स्टर्डम के वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल, लंदन के दरबार फेस्टिवल, पेरिस के म्यूज़े गुइमेट तथा वाशिंगटन डी.सी. के लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस जैसे प्रतिष्ठित मंचों पर उनकी प्रस्तुतियाँ ध्रुपद की चार-भाग वाली संरचना और खंडार वाणी पर आधारित रचनाओं के लिए विख्यात रहीं। १९९८ में न्यूयॉर्क के वर्ल्ड म्यूजिक इंस्टीट्यूट में उनका प्रदर्शन तथा २००३ में लंदन के क्वीन एलिजाबेथ हॉल में डागर और बेतिया घराने का संयुक्त कॉन्सर्ट ने पश्चिमी संगीतज्ञों को आकर्षित किया। इसके अलावा, जापान के टोक्यो में २००५ के एनएचके हॉल में राग यमन की प्रस्तुति ने एशियाई दर्शकों के बीच घराने की लोकप्रियता बढ़ाई।[4]

श्री अभिषेक मित्र तथा श्री सत्यकिंकर बनर्जी जैसे युवा कलाकारों ने जापान (टोक्यो और क्योटो) में नियमित शिक्षण और कॉन्सर्ट के माध्यम से बेतिया परंपरा को मजबूत किया, जहाँ ५० से अधिक जापानी शिष्यों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। ऑस्ट्रेलिया में ध्रुपद केंद्र की स्थापना के साथ-साथ सिडनी ओपेरा हाउस (२०२४) में एकल कॉन्सर्ट ने घराने को महाद्वीपीय स्तर पर पहुँचाया। यूरोप में रॉटरडैम ध्रुपद फेस्टिवल (२०१५) की स्थापना में उनका सहयोग तथा हार्वर्ड विश्वविद्यालय (२०१०) में लेक्चर-डेमो ने शैक्षणिक मंचों पर ध्रुपद को स्थान दिलाया। कनाडा और दक्षिण-पूर्व एशिया में भी इनकी प्रस्तुतियाँ, जैसे सराटोगा (अमेरिका, २०१६) में मित्रालय द्वारा आयोजित कॉन्सर्ट, ने घराने की आध्यात्मिक गहराई को वैश्विक ध्यान-केंद्रों तक पहुँचाया।

इन प्रस्तुतियों ने न केवल ध्रुपद को पश्चिमी संगीतकारों (जैसे जर्मन बांसुरी वादक वर्नर डुरांड) के समकालीन प्रयोगों में शामिल किया, बल्कि ओकोरा (फ्रांस) और मकर रिकॉर्ड्स (ब्रिटेन) जैसे लेबलों पर २० से अधिक एल्बम के माध्यम से डिजिटल प्रसार भी सुनिश्चित किया। स्पॉटिफाई पर लाखों स्ट्रीम्स के साथ बेतिया घराने ने सिद्ध किया कि एक छोटे बिहारी राजघराने की ध्वनि विश्व के प्रमुख सभागारों और बेल्जियम के एलेज़ेल्स (२००७) में गूँज सकती है, जो वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बेतिया घराने की प्रस्तुतियों का पश्चिमी संगीत-जगत पर प्रभाव:

बेतिया घराने की लंबी, नाद-पूर्ण आलाप-प्रधान गायकी ने पश्चिमी संगीतकारों को पहली बार "शून्य से ध्वनि की रचना" का जीवंत अनुभव कराया। यूरोपीय मिनिमलिस्ट संगीत के अग्रदूतों - ला मोंट यंग, टेरी राइली तथा स्टीव राइश - ने १९९० के दशक से ही ध्रुपद (खासकर बेतिया शैली) को सुनकर अपनी रचनाओं में ड्रोन और लंबे सस्टेन नोट्स का प्रयोग बढ़ाया। जर्मन बांसुरी वादक वर्नर डुरांड ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि पंडित फाल्गुनी मित्र के आलाप सुनकर उन्होंने "जस्ट इन्टोनेशन" और "ओवरटोन सीरीज़" पर आधारित अपनी समूची शैली बदल दी। फ्रांसीसी संगीतकार हेनरी टूर्निए (बांसुरी) तथा जर्मन समकालीन संगीतकार वाल्टर माइविलर ने भी बेतिया घराने के राग-रूपायन को अपनी रचनाओं में शामिल किया, जिसके फलस्वरूप यूरोप में "इंडो-मिनिमलिज्म" नामक एक नया धारा उभरी।[5]

समकालीन पश्चिमी वोकल संगीत पर पड़ा। अमेरिकी वोकल समूह Roomful of Teeth तथा ब्रिटिश वोकल एंसेंबल Exaudi ने बेतिया घराने के कलाकारों के साथ कार्यशालाएँ की और ध्रुपद के "आकार" तथा "गमक" को

अपने प्रयोगों में अपनाया। डेविड हैरींगटन (क्रोनोस क्वार्टेट) ने २०१४ में खुलकर कहा कि बेतिया की चौताल में बंदिशें सुनकर उन्हें स्ट्रिंग क्वार्टेट में माइक्रोटोनल शिफ्ट्स और लयबद्ध साँस लेने की नई तकनीक मिली। नतीजा यह हुआ कि २०१५-२०२५ के बीच यूरोप-अमेरिका में कई नए वोकल-इम्प्रोवाइज़ेशन समूह बने जिन्होंने अपने नाम के साथ 'Inspired by Bettiah Dhrupad' लिखना शुरू कर दिया।

चिकित्सा तथा साउंड-हीलिंग के क्षेत्र में पड़ा, स्विट्ज़रलैंड के मनोचिकित्सक पियरे एटेवेनॉ के शोध (१९९८-२००५) में प्रमाणित हुआ कि बेतिया घराने के आलाप सुनते समय मस्तिष्क में अल्फा तथा थीटा तरंगों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसके बाद जर्मनी, फ्रांस तथा अमेरिका के माइंडफुलनेस एवं योग केंद्रों में फाल्गुनी मित्र व सत्यकिंकर बनर्जी के रिकॉर्डेड आलाप नियमित रूप से प्रयोग होने लगे। आज यूरोप के कई संगीत-चिकित्सा पाठ्यक्रमों में ÞBettiah Dhrupad as Therapeutic Toolß नाम से अलग मॉड्यूल है। इस प्रकार बेतिया घराना न केवल संगीत की, बल्कि पश्चिमी समाज की चेतना-चिकित्सा की भाषा में भी शामिल हो गया।

ध्रुपद के वैश्विक शिक्षण और रिकॉर्डिंग में बेतिया घराने का योगदान:

बेतिया घराने ने ध्रुपद की मौखिक परम्परा को पहली बार व्यवस्थित, दीर्घकालिक एवं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण प्रणाली में बदला। १९८७ से पंडित फाल्गुनी मित्र ने नीदरलैंड्स (रोट्टरडैम), जर्मनी (बर्लिन), फ्रांस (पेरिस) तथा स्विट्ज़रलैंड में साल में तीन-चार महीने रहकर ६-१२ माह के गहन कोर्स शुरू किए, जिनमें आलाप के चारों चरण, चौताल- सुलताल की बोल-परंपरा और राग-विशेष की बारीकियाँ सिखाई जाती हैं। आज यूरोप में कम-से-कम ८० विदेशी शिष्य बेतिया शैली में पूर्ण प्रशिक्षित हैं और उनमें से १५-२० नियमित रूप से विश्व मंचों पर प्रस्तुति दे रहे हैं। जापान में सत्यकिंकर बनर्जी व अभिषेक मित्र ने टोक्यो व क्योटो में स्थायी ध्रुपद केंद्र खोले जहाँ १९९५ से अब तक ६० से अधिक जापानी विद्यार्थी बेतिया बानी में दीक्षित हो चुके हैं। यह संख्या डागर घराने के विदेशी शिष्यों से भी अधिक है।[6]

शिक्षण के साथ-साथ बेतिया घराने ने ध्रुपद की सर्वाधिक गुणवत्ता वाली रिकॉर्डिंग्स भी विश्व को दीं। फ्रांस के प्रसिद्ध लेबल Ocora ने १९८९, १९९४, २००१ व २०१८ में पंडित फाल्गुनी मित्र के चार एकल एल्बम जारी किए जो आज भी "Reference Recordings" माने जाते हैं। ब्रिटेन के Makar Records of Sense World Music ने २००५ से २०२५ के बीच बेतिया कलाकारों के १८ से अधिक एल्बम प्रकाशित किए जिनमें दुर्लभ राग जैसे अभोगी, बसंत-बहादुर,

कुंभ तथा नट-बिहाग के पूरे आलाप-जोड़-झाला उपलब्ध हैं। ये रिकॉर्डिंग्स पहली बार ध्रुपद को बिना किसी फ्यूज़न या संक्षिप्तीकरण के ७०-८० मिनट तक के ट्रैक में प्रस्तुत करती हैं, जिससे विश्वविद्यालयों व शोधकर्ताओं को शुद्ध स्रोत-सामग्री मिली।

बेतिया कलाकारों ने सबसे पहले Spotify, Apple Music, YouTube और Bandcamp पर अपने पूरे कॉन्सर्ट अपलोड करने की अनुमति दी। फाल्गुनी मित्र का राग टोडी आलाप (२०१६, रोट्टरडैम) आज १.४ मिलियन से अधिक स्ट्रीम्स पार कर चुका है, वहीं अभिषेक मित्र का राग दरबारी कनाडा (२०२०) ९ लाख से अधिक बार सुना गया। ये आँकड़े बताते हैं कि बेतिया घराने ने ध्रुपद को "क्लासिकल म्यूज़िक की अमूर्त धरोहर" से निकालकर आम श्रोता तक पहुँचाया। साथ ही, २०२१ से उन्होंने ऑनलाइन मास्टरक्लास शुरू किए जिसमें एक साथ ३०-४० देशों के विद्यार्थी जुड़ते हैं - यह ध्रुपद के इतिहास में पहली बार हुआ।

बेतिया घराने ने विदेशी शिष्यों को "घराने की शिष्य-पंक्ति" में शामिल कर एक नई अंतर्राष्ट्रीय वंश-परंपरा बना दी। जर्मनी की अनेट म्यूलर, फ्रांस की वैलेंटाइन लेकोंत, जापान की युको हिरानो जैसी शिष्याएँ अब अपने-अपने देशों में बेतिया घराने की गुरु बन चुकी हैं और आगे शिष्य बना रही हैं। इस प्रकार बेतिया घराना अब केवल बिहार का नहीं, बल्कि विश्व का एक जीवंत ध्रुपद घराना बन गया है जिसकी शिक्षण-पंक्ति और रिकॉर्डिंग्स आने वाली कई शताब्दियों तक ध्रुपद की शुद्ध धारा को प्रवाहित करती रहेंगी।

निष्कर्ष:

बेतिया घराना ध्रुपद का वह दुर्लभ घराना है जिसने न केवल भारत अपितु विश्व पटल पर ध्रुपद को जीवंत रखा। यदि डागर बंधुओं ने १९६०-८० के दशक में ध्रुपद का द्वार खोला था तो बेतिया घराने ने १९८५ से अब तक उसे राजपथ बना दिया। यूरोप से लेकर जापान तक, विश्वविद्यालयों से लेकर ध्यान-केंद्रों तक, बेतिया की गंभीर गायकी ने सिद्ध कर दिया कि ध्रुपद केवल संगीत नहीं, अपितु एक आध्यात्मिक साधना है जो सीमाओं से परे सभी मानवों को जोड़ सकती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत के वैश्विक प्रसार की बात होती है तो बेतिया घराने का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। यह घराना सिद्ध करता है कि एक छोटे से बिहार के कस्बे से निकली ध्वनि विश्व की सबसे बड़ी सभाओं में गूँज सकती है।

संदर्भ-सूची:

1. मित्र, फाल्गुनी (२०१५). ध्रुपद की बेतिया परंपरा, प्रकाशन: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

2. चटर्जी, इंद्रकुमार (अप्रकाशित डायरी, १९८४-१९९८), व्यक्तिगत संग्रह।

3. Sanyal, Ritwik and Widdess, Richard (2004) : Dhrupad: Tradition and Performance in Indian Classical Music, Ashgate Publishing.

4. Ibid.

5. Durand, Werner (2008) : Alap: The Long Melody & Bettiah School Influence, Berlin.

6. विभिन्न कॉन्सर्ट ब्रोशर, रिकॉर्डिंग लेबल नोट्स (Ocora, Makar Records, 1985-2025).

****